ISSN : 2581-8872 Vol -3, No. - 2, March - 2021

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research

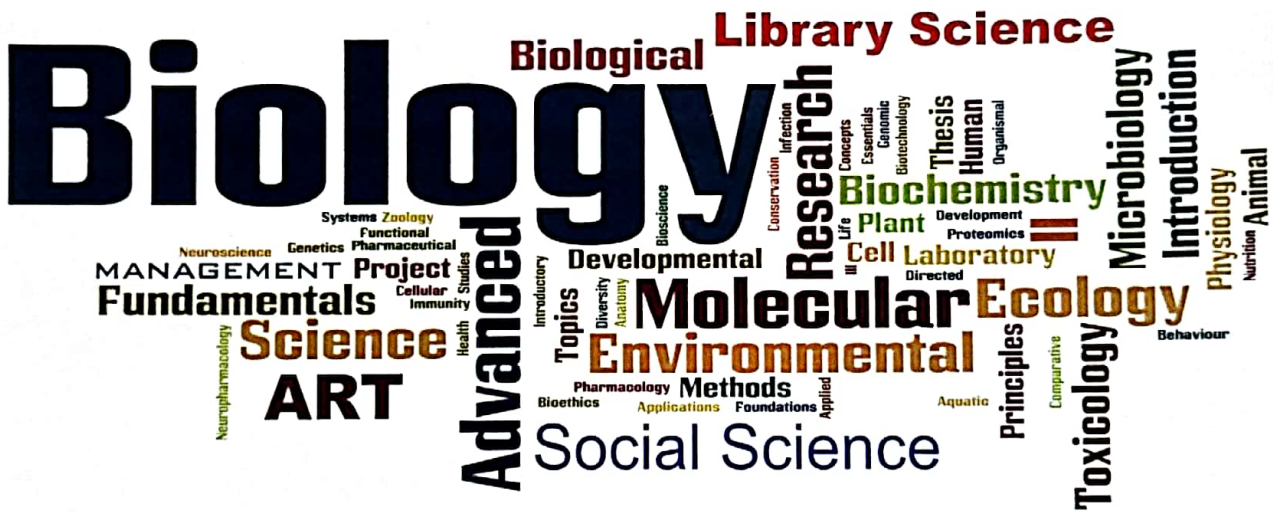

Peer Reviewed - Refereed Journal
Impact Factor - 4.8, Open Access,
Double Blind, Monthly Online Journal

Google scholar | ISRS International Scientific Research Solution | Indian Tech | GLOBAL CERTIFICATION SERVICES | Radiant Group of Institution

EDITOR
PRASHANT KUMAR
PUBLISHED BY
International Scientific Research Solution
Web : www.srfresearchjournal.com
Email : isrsjournal@gmail.com

Scanned with CamScanner

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	मीडिया, मर्डर और सेक्स	डॉ. बसंत कुमार	1-3
2	पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की बढ़ती भूमिका	डॉ. जगतसिंह बामनिया डॉ. सपना पटेल	4-9
3	स्त्री शिक्षा से राष्ट्र निर्माण व ज्ञान ज्योती माई सावित्री बाई फुले : एक अध्ययन	Kanchan Kumari Dr. Satish Kumar Pandey	10-14
4	कोविड-19 का पर्यावरण पर प्रभाव–एक भौगोलिक अध्ययन	प्रा. कांबले दयानंद सखाराम डॉ. सुनिल रजपूत	15-17
5	उत्तर प्रदेश में चौरी–चौरा विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसकी प्रतिक्रिया	सुरेन्द्र कुमार निषाद	18-20
6	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना : एक परिचय	प्रीति	21-24
7	विन्ध्य रियासत एवं प्रजातंत्र का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय	25-27
8	साहित्य और इतिहास का अन्तर्सम्बद्ध	डॉ. सीमाबाला अवास्या	28-31
9	लिंगभेद के चयनित मापदंडों के आधार पर इंदौर की शहरी एवं ग्रामीण आबादी का अंतर–अनुभागीय तुलनात्मक अध्ययन	विजेन्द्र लोट प्रो. आर. डी. मौर्य	32-36
10	हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा सहयोग तंत्र को चरितार्थ करना : तटीय राष्ट्र और उपयोग कर्ता राष्ट्रों के बीच जिम्मेदारियों को साझा करना	हरिशंकर	37-43
11	अर्द्ध बेरोजगारी को दुर करने के लिए महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का अध्ययन (बड़वानी जिले के विशेष संदर्भ में)	डॉ. इन्दु डावर कुमारी रजनीगंधा बामनियाँ	44-48
12	विभिन्न दिव्यांग बच्चों की संवेगात्मक स्थिरता मे अंतर का अध्ययन	साजेदा सिद्दीकी डॉ. श्रीमति वीणा बाजपेयी डॉ. श्रीमति आभा तिवारी	49-55
13	खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंर्तगत सार्वजनिक वितरण प्रणाली में हितग्राहियों को आने वाली समस्याओं का विश्लेषण (म.प्र. के बड़वानी जिले के विशेष संदर्भ में)	ममता राणे प्रो. आर.डी. मौर्य	56-64
14	महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों की वर्तमान में प्रासंगिकता : दलित परिपेक्ष में	Tabassum Parveen	65-67
15	ग्रामीण पर्यटन एवं विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	विनय कुमार गिल्ला	68-72
16	भारतीय संसद में महिला प्रतिनिधित्वः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (वर्ष 1952 –2014 के संदर्भ में)	प्रीति कुमारी प्रो. (डॉ.) पद्मलता ठाकुर	73-77
17	दलित महिलाओं की सामाजिक संघर्ष बिहार के संदर्भ में (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)	सुनैना कुमारी डॉ. जावेद अंजुम	78-82
18	दहेज के विभिन्न आयाम, प्रभाव एवं सरकारी प्रयास	लक्ष्मी कुमारी डॉ. योगेन्द्र प्रसाद सिंह	83-87
19	भारत–चीन संबंधों का यथार्थबोध : एक अध्ययन	डॉ. (श्रीमती) संगीता अंबादे (मेश्राम)	88-89
20	मुक्तिबोध के काव्य में बिम्ब	डॉ. प्रभुसेन	90-92
21	ग्रामीण अधिवास प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन (जिला डिण्डौरी के संदर्भ में)	डॉ. लोकेश श्रीवास्तव शैलेन्द्र भवदिया	93-101
22	कृषि–व्यवसायिक गतिविधियों में रोजगार की संभावनाएँ	आलोक कुमार विश्वकर्मा डॉ. उतसव आनन्द	102-105

Scanned with CamScanner

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research, U.I.J.M.S.R.
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact Factor - 4.8, Open Access, Double Blind, Monthly Online Journal
ISSN : 2581-8872, Vol. : 3, No. : 2, March - 2021
2021

कृषि–व्यवसायिक गतिविधियों में रोजगार की संभावनाएँ

आलोक कुमार विश्वकर्मा, शोधार्थी
डॉ. उतसव आनन्द, शोध–निर्देशक
अर्थशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तावना :– भारत एक विकासशील देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था तीन भागों में विभाजित है– प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र। प्राथमिक क्षेत्र का संबंध कृषि, वानिकी और पशुपालन से है, द्वितीयक क्षेत्र का संबंध उद्योग एवं विनिर्माण से और तृतीयक क्षेत्र का संबंध सेवाओं से है। कृषि प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत आती है एवं भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारभूत स्तंभ है। कृषि देश का सबसे बड़ा उद्योग होने के साथ ही, कृषि क्षेत्र में देश की 65 प्रतिशत जनसंख्या को जीविका प्राप्त होती है। भारतीय कृषि की विशेषता है कि देश की 14.1 करोड़ हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि पर खरीफ, रबी और जायद (ग्रीष्म) तीन अलग–अलग मौसमों में देशभर में खेती होती है। कृषि की प्रकृति मौसमी है, अर्थात् वर्षा ऋतु, ग्रीष्म ऋतु एवं शरद ऋतु तीनों अपने मौसम एवं जलवायु भी खरीफ, रबी एवं जायद के अतिरिक्त नगदी फसलों के उत्पादन के लिए भी उपयुक्त है विभिन्न मौसमों के अंतर्गत उत्पादित होने वाली प्रमुख फसलें निम्नलिखित हैं–

1. खरीफ की फसलें – यह फसल वर्षा ऋतु के आगमन पर जून से जुलाई तक बोई जाती है एवं अक्टूबर–नवम्बर माह में काटी जाती है। इसकी प्रमुख फसलें सोयाबीन, धान, ज्वार, मक्का, अरहर, मूँग, मूँगफली, तिल इत्यादि है।

2. रबी की फसलें – यह फसल खरीफ की फसल की कटाई के पश्चात् अक्टूबर–नवम्बर माह में बोयी जाती है और ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ पर मार्च–अप्रैल में काट ली जाती है। इसकी प्रमुख फसलें गेहूँ, चना, मसूर, मटर, राई–सरसों, अलसी इत्यादि है।

3. जायद की फसलें – यह फसल मुख्यतः मार्च–अप्रैल में बोई जाती है एवं जून में काटी जाती है। इस वर्ग की फसलों में तेज गर्मी एवं शुष्क हवाऐं सघन करने की अच्छी क्षमता होती है। उदाहरण– मूँग, उड़द, मक्का, मूँगफली, सूरजमुखी, धान इत्यादि।

4. नकद फसलें – यह वे सभी फसलें है, जो व्यापार के उद्देश्य से कृषकों द्वारा वर्ष के सभी मौसमों में उत्पादित की जाती है। जैसे– आलू, प्याज, अदरक, हल्दी, पान, गन्ना, जूट, कपास, तम्बाकू एवं औषधीय फसलें।

विकसित देशों में जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका की बात की जाए तो वहाँ लगभग 2.3 बिलियन एकड़ कृषि योग्य भूमि है। जिसमें 21 प्रतिशत का उपयोग फसलों के लिए, 25 प्रतिशत चारा उत्पादन के लिए और 30 प्रतिशत भूमि का उपयोग वानिकी के लिए किया जाता है।

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा उपलब्ध आँकड़ों से पता चलता है कि 1950–51 और 1970–71 के दौरान कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में 59.1 व 48.1 प्रतिशत योगदान था परन्तु जैसे ही औद्योगीकरण एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई कृषि के भाग में तीव्र गिरावट आई और यह 2011–12 में कम होकर 13. 5 प्रतिशत रह गई।

उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- कृषि–व्यवसाय के अंतर्गत रोजगार के अवसरों का अध्ययन।
- फसल प्रारूप एवं कृषि उत्पादन पर आधारित व्यवसायों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित है। जिसके लिए पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं ऑनलाइन सामग्री से आँकड़ों को प्राप्त कर अध्ययन किया गया है।

Scanned with CamScanner